जन्मदिन की भेंट

बच्चन

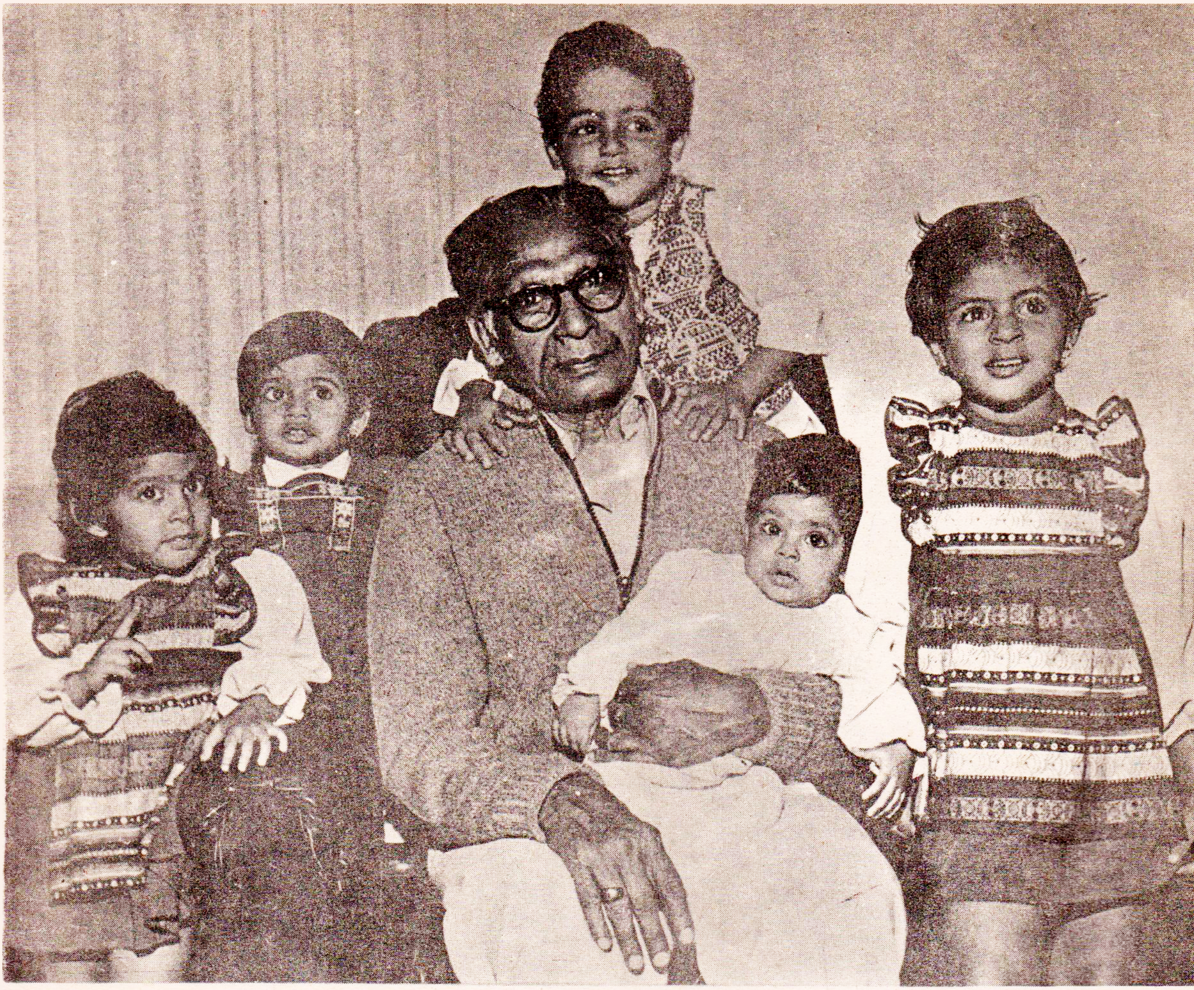


जन्मदिन की भेंट

बच्चन



राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली



अभिषेक
बाएं से—नीलिमा, नम्रता, दादा जी, श्वेता
नयना

मूल्य : पांच रुपये (5·00)
संस्करण 1982 © बच्चन ✡ JANAM DIN KI BHAINT (Poems) by Bachchan

चिरंजीव श्वेता की
चौथी वर्षगांठ अथवा पाँचवें जन्म-दिन पर
श्वेता बच्चन
नीलिमा बच्चन
अभिषेक बच्चन
नम्रता बच्चन
नयना बच्च्चन
और पिंकी-आशु
को
दादा जी के
आशीष-प्यार के साथ





नया सबेरा

मुर्गा कहता कुक-ड़ूँ-कूँ-
अभी-अभी मैं जागा हूँ।
जागो, तुम्हें जगाता हूँ।
मुर्गा कहता कुक-ड़ूँ-कूँ-

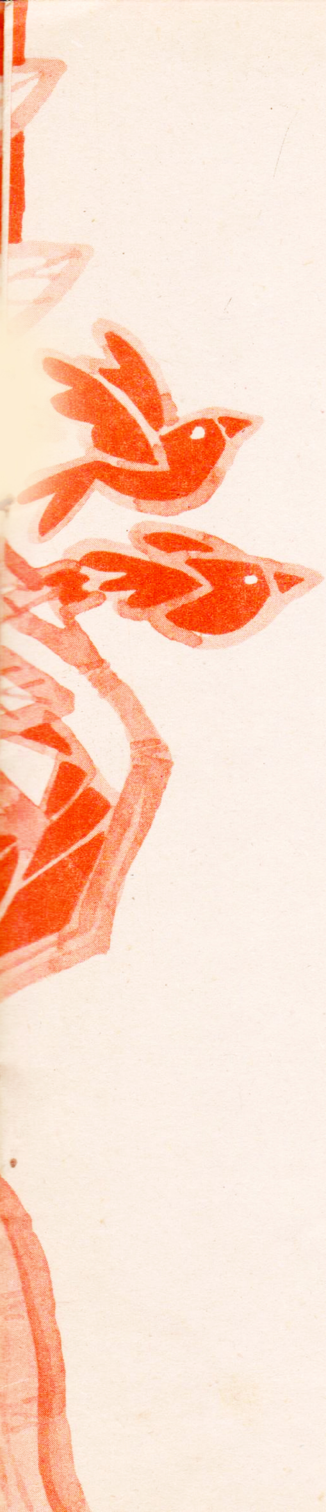
रात गुज़रने वाली है,
कम होती अँधियाली है,
सूरज आने वाला है,
जो करता उजियाला है।

चिड़ियाँ गाने वाली हैं,
जो सुन्दर पर वाली हैं,
फूल विहँसने वाले हैं,
जिनके रंग निराले हैं।









चिड़िया का घर

चिड़िया, ओ चिड़िया,
कहाँ है तेरा घर ?—
उड़-उड़ आती है
जहाँ से फर-फर !
चिड़िया, ओ चिड़िया,
कहाँ है तेरा घर ?—
उड़-उड़ जाती है
जहाँ को फर-फर !

बन में खड़ा है जो
बड़ा-सा तरुबर
उसी पे बना है
खर-पातों वाला घर।
उड़-उड़ आती हूँ
वहीं से फर-फर !
उड़-उड़ जाती हूँ
वहीं को फर-फर !

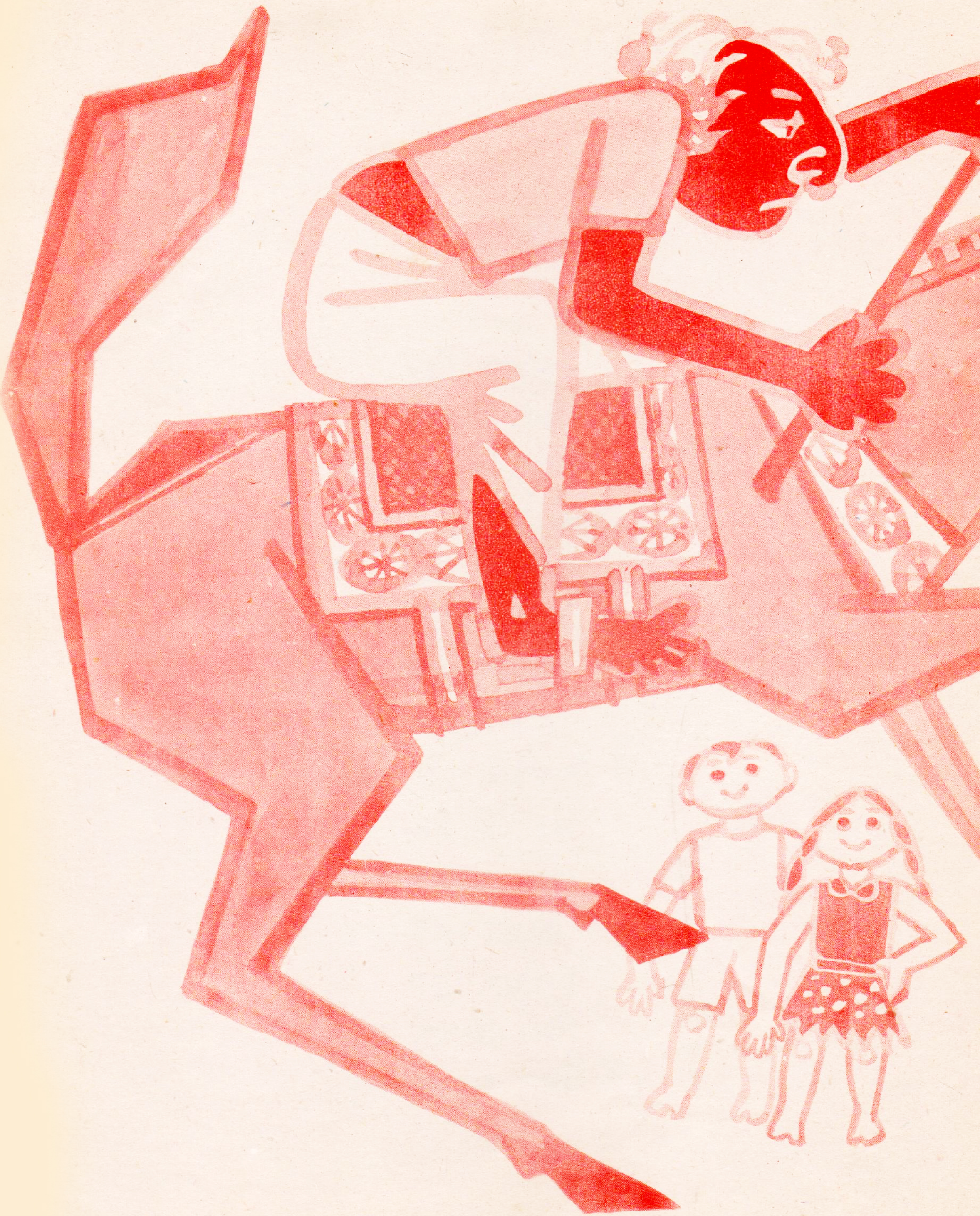


तितली रानी

बड़ी सयानी
तितली रानी
फूल-फूल पर जाती है,
फूल-फूल से
रंग चुराकर
अपने पंख सजाती है।
बड़ी सयानी
तितली रानी
मेरा मन ललचाती है,
जब मैं उसे
पकड़ने जाता
इधर-उधर उड़ जाती है।
बड़ी सयानी
तितली रानी
फूल-फूल पर जाती है।









काठ का घोड़ा

काठ का घोड़ा,
काठ की ज़ीन,
उस पर बैठे
लंगड़ दीन।

कोड़ा खूब चलाते हैं
रह-रह एड़ लगाते हैं
कहीं न जाते-आते हैं
झूम-झूम रह जाते हैं।

हाथी दादा

घंटे की धुन पड़ी सुनाई,
हाथी आता होगा, भाई।
सचमुच हाथी आता है,
दोनों कान हिलाता है।
काला, ऊँचा, भारी है,
कैसी अजब सवारी है।
चढ़ा महावत गर्दन पर
एक हाथ में अंकुश धर।
इसको वही चलाता है
सीधी राह लगाता है।
लंबी सूँड़ लटकती आगे,
इसकी राह छोड़ सब भागे।
हाथी दादा, कहाँ चले ?
किसे ढूँढ़ने को निकले ?

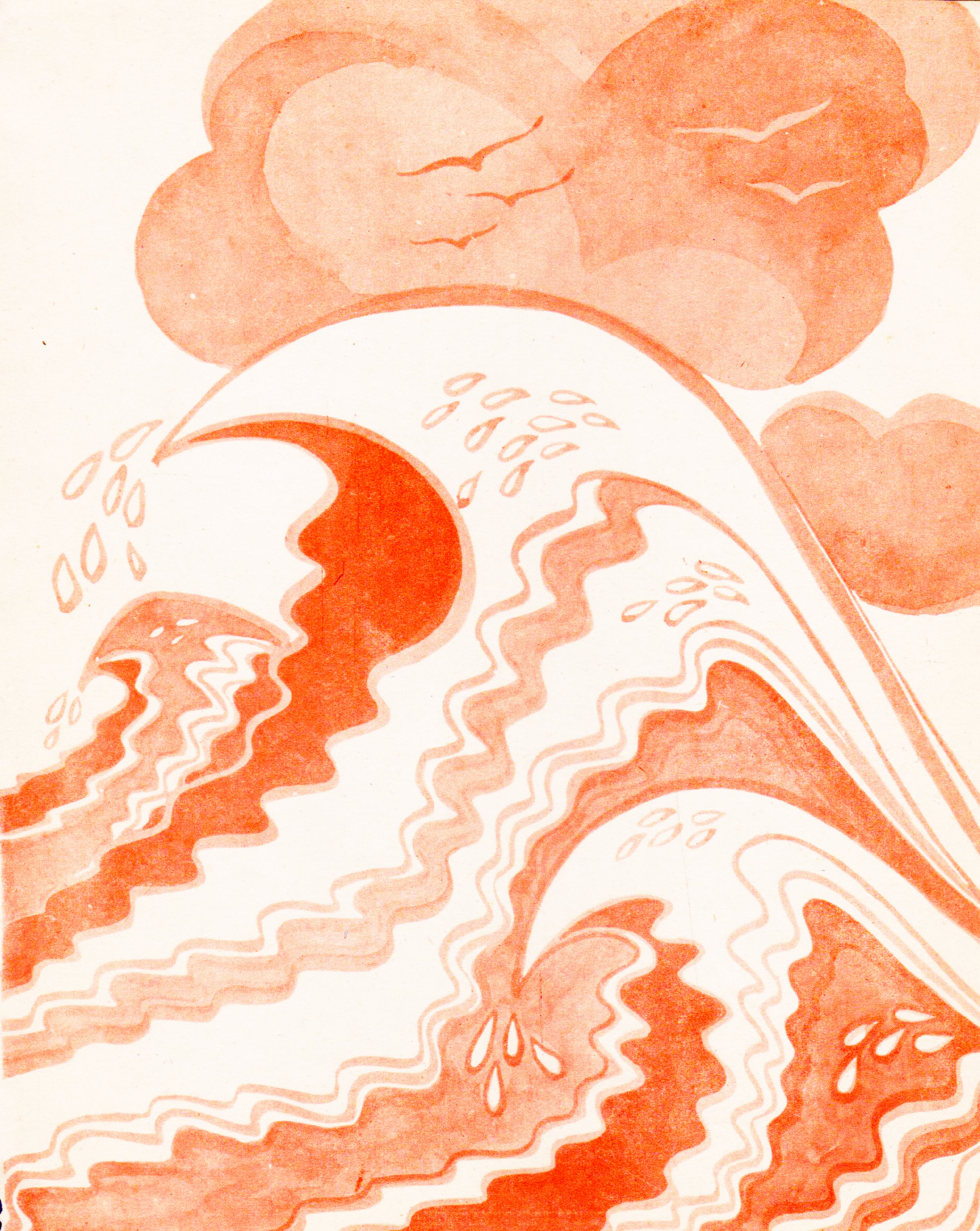


गुब्बारे

गुब्बारों का लेकर ढेर,
देखो, आया है शमशेर।

हरे, बैंगनी, लाल, सफ़ेद,
रंगों के हैं कितने भेद!
कोई लंबा, कोई गोल,
लाओ पैसे, ले लो मोल।
मुट्ठी में लो इनकी डोर,
इन्हें घुमाओ चारों ओर।
हाथों से दो इन्हें उछाल,
लेकिन छूना ख़ूब सँभाल।
पड़ा किसी के ऊपर ज़ोर,
एक ज़ोर का होगा शोर।
गुब्बारा फट जाएगा,
खेल ख़तम हो जाएगा।





सागर की लहर

हर-हर-हर-हर
हहर-हहर—
ऊँची उठती लहर-लहर ।

ऐसी लगती दूरी पर
जैसी मोती की झालर ।

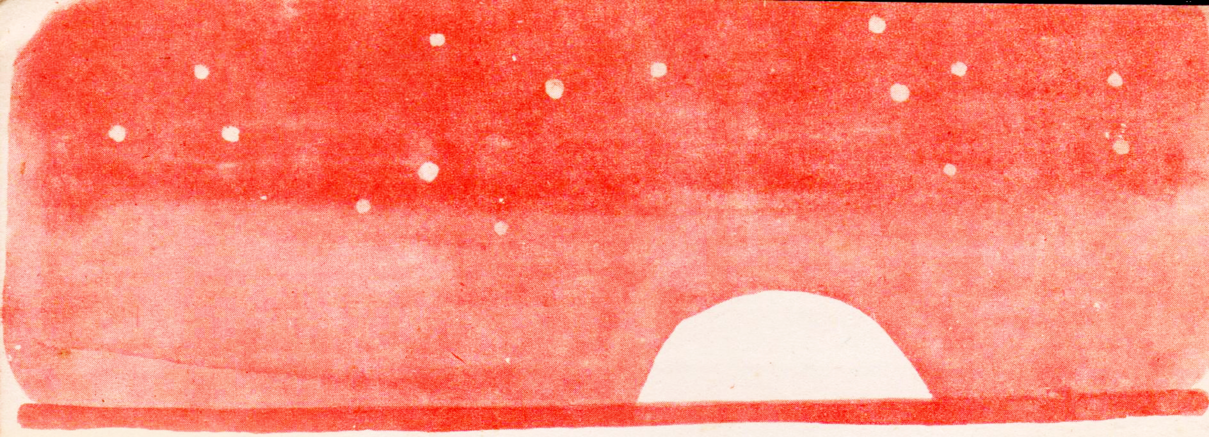
झालर आती जाती पास,
मन में बँधती जाती आस—
मोती मैं चुन लाऊँगी,
घर पर हार बनाऊँगी ।

लहर किनारे जब आती
फेन-फेन बस रह जाती ।
हर-हर-हर-हर
हहर-हहर—
ऊँची उठती लहर-लहर ।



बंदर-बँदरिया

देखो, दूल्हा बंदर आया,
साथ बँदरिया दूल्हन लाया।
बंदर बजा रहा खँझड़ी,
नाच रही दूल्हन बँदरी।
फिर दोनों में हुई लड़ाई।
रूठ बँदरिया मैके आई।
बँदरी बिन बंदर बेहाल,
चला मनाने को ससुराल।
फिर आपस में करके मेल
लगे खेलने दोनों खेल।
दिखा चुके ये अपना काम
पैसे दो तो करें सलाम।



तारे

माँ जब सूरज ढल जाता है
अँधियारा छा जाता है,
आसमान में जग-मग, जग-मग
दीवे कौन जलाता है ?

रात बीतने पर, सपनों की,
जो सूरज चमकाता है,
जो सोने-चाँदी की किरनें
धरती पर फैलाता है ।

वह, जब सूरज ढल जाता है
अँधियारा छा जाता है,
आसमान में जग-मग, जग-मग
दीवे लाख जलाता है ।

लोकप्रिय बाल कविताएं

बन्दर बाँट	बच्चन
नीली चिड़िया	बच्चन
हुआ सवेरा उठो, उठो	सोहनलाल द्विवेदी
हम बालवीर	सोहनलाल द्विवेदी
आज़ादी के गीत	निरंकारदेव सेवक
चाचा नेहरू	विष्णुकांत पांडेय
मेरी गुड़िया कुछ तो बोल	धर्मपाल शास्त्री
फूल खिले हैं डाली-डाली	रुद्रदत्त मिश्र
आओ करें सवारी	रामचन्द्र तिवारी
खेलें कूदें नाचें गाएं	धर्मपाल शास्त्री

राजपाल

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली